

दो सिर वाला जुलाहा

एक बार मन्थरक नाम के जुलाहे के सब उपकरण, जो कपडा बुनने के काम आते थे, टूट गये। उपकरणो को फिर बनाने के लिये लकडी की जरूरत थी। लकडी काटने की कुल्हाडी लेकर वह समुद्रतट पर स्थित वन की ओर चल दिया। समुद्र के किनारे पहुँचकर उसने एक वृक्ष देखा और सोचा कि इसकी लकडी से उसके सब उपकरण बन जायेगे। यह सोच कर वृक्ष के तने मे वह कुल्हाडी मारने को ही था कि वृक्ष की शाखा पर बैठे हुए एक देव ने उसे कहा- "मैं इस वृक्ष पर आनन्द से रहता हूँ, और समुद्र की शीतल हवा का आनन्द लेता हूँ। तुम्हे इस वृक्ष को काटना उचित नही। दूसरे के सुख को छीनने वाला कभी सुखी नहीं होता।"

जुलाहे ने कहा- "मैं भी लाचार हूँ। लकडी के बिना मेरे उपकरण नही बनेगे, कपडा नही बुना जायगा, जिससे मेरे कुटुम्बी भूखे मर जायेगे। इसलिये अच्छा यही है कि तुम किसी और वृक्ष का आश्रय लो, मैं इस वृक्ष की शाखाये काटने को विवश हूँ।"

देव ने कह -"मन्थरक ! मैं तुम्हारे उत्तर से प्रसन्न हूँ। तुम कोई भी एक वर माँग लो, मैं उसे पूरा करूँगा, केवल इस वृक्ष को मत काटो।"

मन्थरक बोला-"यदि यही बात है तो मुझे कुछ देर का अवकाश दो। मैं अभी घर जाकर अपनी पत्नी से और मित्र से सलाह करके तुम से वर मांगूँगा।"

देव ने कहा- "मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।"

गाँव में पहुँचने के बाद मन्थरक की भेंट अपने एक मित्र नाई से हो गई। उसने उससे पूछा-"मित्र ! एक देव मुझे वरदान दे रहा है, मैं तुझ से पूछने आया हूँ कि कौन सा वरदान माँगा जाए।"

नाई ने कहा- "यदि ऐसा ही है तो राज्य मांग ले। मैं तेरा मन्त्री बन जाऊँगा, हम सुख से रहेंगे।"

तब, मन्थरक ने अपनी पत्नी से सलाह लेने के बाद वरदान का निश्चय करने की बात नाई से कही। नाई ने स्त्रियों के साथ ऐसी मन्त्रणा करना नीति-विरुद्ध बतलाया। उसने सम्मति दी कि "स्त्रिया प्रायः स्वार्थपरायणा होती है। अपने सुख-साधन के अतिरिक्त उन्हे कुछ भी सूझ नही सकता। अपने पुत्र को भी जब

वह प्यार करती है, तो भविष्य में उसके द्वारा सुख की कामनाओं से ही करती है।"

मन्थरक ने फिर भी पत्नी से सलाह किये बिना कुछ भी न करने का विचार प्रकट किया। घर पहुँचकर वह पत्नी से बोला- "आज मुझे एक देव मिला है। वह एक वरदान देने को उद्यत है। नाई की सलाह है कि राज्य मांग लिया जाय। तू बता कि कौन सी चीज़ मांगी जाये।"

पत्नी ने उत्तर दिया- "राज्य-शासन का काम बहुत कष्ट-प्रद है। सन्धि-विग्रह आदि से ही राजा को अवकाश नहीं मिलता। राजमुकुट प्रायः कांटो का ताज होता है। ऐसे राज्य से क्या अभिप्राय जो सुख न दे।"

मन्थरक ने कहा- "प्रिय ! तुम्हारी बात सच है, राजा राम को और राजा नल को भी राज्य-प्राप्ति के बाद कोई सुख नहीं मिला था। हमें भी कैसे मिल सकता है किन्तु प्रश्न यह है कि राज्य न मांग जाय तो क्या मांगा जाये।"

मन्थरक-पत्नी ने उत्तर दिया- "तुम अकेले दो हाथों से जितना कपड़ा बुनते हो, उससे भी हमारा व्यय पूरा हो जाता है। यदि तुम्हारे हाथ दो की जगह चार हो और सिर भी एक की जगह दो हो तो कितना अच्छा हो। तब हमारे पास आज की अपेक्षा दुगना कपड़ा हो जायगा। इससे समाज में हमारा मान बढ़ेगा।"

मन्थरक को पत्नी की बात जच गई। समुद्रतट पर जाकर वह देव से बोला- "यदि आप वर देना ही चाहते हैं तो यह वर दो कि मैं चार हाथ और दो सिर वाला हो जाऊँ।"

मन्थरक के कहने के साथ ही उसका मनोरथ पूरा हो गया। उसके दो सिर और चार हाथ हो गये। किन्तु इस बदली हालत में जब वह गाँव में आया तो लोगो ने उसे राक्षस समझ लिया, और राक्षस-राक्षस कहकर सब उसपर टूट पड़े। लोगो ने पत्थरों से इतना मारा कि वह वही मर गया।

सीख : मित्र की शिक्षा मानो ।

यह कथा सुनकर सुवर्णसिद्धि ने कहा, "इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि अगर अपने पास बुद्धि न हो तो मित्रों की सलाह ही मान लेनी चाहिए।"

चक्रधर ने कहा, "ठीक ही कहते हैं। असंभव की आशा और अनागत की चिंता मे डूबे रहनेवालो की दशा काल्पनिक सोमशर्मा के पिता जैसी होती है।"

सुवर्णसिद्धि ने पूछा, "वह कौन था?"

चक्रधर ने बताया--

ब्राह्मण का सपना

एक भिर बाला एलाहा

एक मर भनूक नाम क एलाहा के मेम उपकरण, एकेपरा मरुन के काम मुउ घ, एए गवा उपकरण के द्दिर मनन के लिय लकरी की एकरउ थी। लकरी काएन की कलुहरी लकर वरु मभएउए पर भिउ वन की उर एल ढिया। मभए ककिनर परुणिकर उभन एक वरु एपि उर मणे कि उमकी लकरी म उमक मेम उपकरण मर एवगो घेरु मणे कर वरु क उेन मेवेरु कलुहरी भारन के की घा कि वरु की मापा पर मठे कर एक एवे न उेम केरु - "भउम वरु पर मुनरु मरेरुउा रु, उर मभए की मीउल रुवा का मुनरु लउे रु उमुउेम वरु क काएन उमिउ नकी। एमर के मेप क कीनन वेला करी मापी नकी रुते।"

एलाहा ने केरु - "भरी लाणर रु लकरी क गिन भर उेपकरण नकी मरुगे, कपरा नकी मरु एवगा, एमम भर केएमी रुपु भर एवगो उमलिय घेएरु वकी रुक उमु किमी उर वरु का मुमय ल, भउम वरु की मापा घ काएन के विवम रु।"

एवे न केरु - "भनूक ! भउेमुए उउु म पेभन रु उमु करै ही एक वर भागे ल, भउेम परु करुगा, कवेर उम वरु क भउे काए।"

भनूक मले - "घदि वकी मउ रु उे भए केरु एर का मवकाम ए भेघेरी पर एकर मपनी पउानी म उर भिउ म मेला रु कर क उेमु म वेर भांगुगा।"

एवे न केरु - "भउेमुएरी पउीवा करुगा।"

गवे भपेरुणिन के मरे भनूक की रुए मपन एक भिउ नरं म के गेरी। उभन उेमम पकरु - "भिउ ! एक एवे भए वेरएन एरेरु रु, भउेए म पेकरु मेषा रुक केन म वरएन भागे एग।"

नरं न केरु - "घदि रिभा की रुते रेए भांगे ला भेउेरा भनी मर एउगा, रुम माप म ररुगा।"

उम, भनूक न मेषनी पउानी म मेला रु लने के मरे वरएन का निमघु करन की मउ नरं म केरी। नरं न भिउ के मेष रिमी भनूक करन नीउि-विरुम उलावा। उभन ममउि मी कि "भिउा पृथः मरु पराव" रुती रु मेषन मेप-भाएन क मेषिरी रु उन केरु ही मए नकी मकउ। मपन पेउ क ही एम वरु पएर करती रु, उे विवम उेमक एरु माप की कामना उ म की करती रु।"

भनूक न द्दिर ही पउानी म मेला रु कि घ गिन कुरु ही न करन के विणर पकरु किवा। पर परुणिकर वरु पउानी म मले - "मुए भए एक एवे भिला रुवेरु एक वरएन एवे के उेउ रु नरं की मला रु रुक एए भांगे लिय एघा उरुउ कि केन मी एीए भांगी एघा।"

पउानी न उेउ रु ढिया - "एए मभन का काम मरुउ कपएरु रु भेचि विगरु मुदि म की एए क मेषकाम नकी भिलउ। एए मरुए पृथः काए के उए रुते रु रिम रेए म के मरुि पृथ ए मेप न ए।"

भनूक न केरु - "पिथ ! उमुएरी मउ मए रु, एए मभ क उर एए नल क ही एए पृपि, क मरे मप नकी भिला घ। रुम ही कमे भिल मकउ रुक न पुमय रु रुक एए न भांगे एघ उ के भांगे एघा।"

भनूक-पउानी न उेउ रु ढिया - "उमु मकले ए के घ मे एउेन कपरा मरुउ रु, उमम ही रुभार वघु परु रु एउ रु घेदि उमुएर के घ ए की एगर एर रु उर भिर ही एक की एगर ए रु उे किउन मएरु रु उे रुभार पेम मुए की मपने एगन कपरा रु एवगा। उमम मेभए म रुभार भा न मरुगा।"

भनरूक क पेडा नी की गउ एउ गरीं। मभइउए पर एकर वरु एवे मरेले। "बदि सुप वर एने नी एउउरु रुते धेरु वर ए कि भएर काष एउ ए भिर वला रुएउ।" भनरूक क केरुन के भाष नी उमका भररेष परा रु गेया। उमक ए भिर एउ एउर काष रु गेया कि नुम गदली कालउ भएर वरु गवे भसुया उलेगे ने उम गेभम मभए लिया, एउ गेभ-गेभ करुकर मउ उमपर एए पकालेगे ने पेडु भे उउन भएर कि वरु वली भर गया।

भीप : भिउ की मिखा भाने

वरु कषा भनकर भनरूक भिमिनुन केरु, "उभीलिय उ भेकेरुउ रु कि मगर मपन पोम गमिनुन रुते भिउ की भलारु नी भान लनी एउरिय।"

एरुएर न केरु, "दीक नी करुउ रु भिमंठव की सुमा एउ मनागउ की गिउं भेरु- ररुनवेल की एमा काल दिक भभेमगु क पिउ एमी रुती रु।"

भनरूक भिमिनुन पेकरु, "वरु केन घा?"

एरुएर न रेउा घा--

गुरुधु का मपन

मनरूक - उगिल्ल अपभे